श्रीमद्भागवत महापुराण का सांगीतिक महत्त्व

अमिता शर्मा

लायका भाटिया

भागवतीय साधना में भी संगीत का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान था। यत्रा–तत्रा भक्ति साधना के अन्तर्गत कीर्तन का उपदेश दिया गया है। इस प्रकार के कीर्तनों में संगीत के तीनों अंग अर्थात् गायन, वादन एवं नृत्य का प्रचलन था।

भागवत में संगीत के क्रियात्मक पक्ष के साथ–साथ सैद्धान्तिक पक्ष का भी विवरण प्राप्त होता है। क्रियात्मक पक्ष पर कई लेखकों द्वारा लेख प्राप्त होते है परन्तु संगीत का सैद्धान्तिक पक्ष अभी अपेक्षित है। नाद का विवरण भागवत में कई छंदों में प्राप्त होता है।